International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 2, Issue 5, Non.-Dec. 2022, pp: 395-399 www.ijhssm.org

# "आत्मनिर्भर भारत:सुभाष की दृष्टि में"

**अरूण यादव**
**शोध छात्र**
**अर्थशास्त्र विभाग**
**सामाजिक विज्ञान संकाय**
**महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी**
**उत्तर प्रदेश, भारत**

Date of Submission: 01-12-2022 Date of Acceptance: 10-12-2022

**सारांश(Abstract):-**
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को भारत के केवल उग्र राष्ट्रवादी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। भू- राजनीतिक सामाजिक भागीदारी के रूप में नेता जी के योगदान की ओर बहुत कम विद्वानों एवं वर्तमान में लिखित पुस्तकों द्वारा ध्यान आकर्षित किया गया। वस्तुतः राजनीति और समाज सुधार के रूप में आत्मनिर्भर भारत की संज्ञा देने के क्षेत्र में उनका योगदान इतना महान अर्थात विराट एवं युगांतरकारी है, कि उनके जीवन के सामाजिक पहलुओं तक लोगों की दृष्टि जा ही नहीं पाती। नेता जी के आत्मनिर्भर विकसित समाज के रूप में उनके योगदान को केवल एक लेखांश के माध्यम से आंकना असंभव हो गा। अपने एक व्याख्यान में कहते हैं, कि "अंग्रेजों से यह आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है , कि वे स्वयं अपना साम्राज्य छोड़ देंगे हमें भारत के भीतर एवं बाहर से स्वतंत्रता के लिए स्वयं संघर्ष करना होगा" यह तभी संभव है, जब हम अपना विराट व्यक्तित्व बनाने हेतु आत्मनिर्भरता की विचारधारा को अपने जीवन में अनुसरण करेंगे जिसके परिणाम स्वरूप हम स्वयं विकसित एवं सक्षम होंगे अंग्रेजों से अपनी आज़ादी छीनने के लिए।

**कुंजी भूत शब्द:-** आज़ाद हिन्द फौज निर्माता, समाज सुधारक, विराट व्यक्तित्व, प्रख्यात क्रांतिकारी, युगांतरकारी, आत्मनिर्भर भारत

**परिचय(Introduction):-**

सुभाष चंद्र बोस को भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े उग्र राष्ट्रवादी नेता के रूप में जाना जाता है। उनका जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिशा राज्य में स्थित कटक जनपद में हुआ था पिताजी का नाम जानकी नाथ बोस था वह पेशे से एक वकील थे। सुभाष चंद्र बोस की प्रारंभिक शिक्षा यूरोपियन स्कूल कटक से हुई थी वह एक मेधावी छात्र होने के कारण उनका दाखिला बी oएo(आनर्स) प्रेसीडेंसी कॉलेज बंगाल में हो गया परन्तु वहाँ पर अंग्रेज प्रोफेसरों का भारतीय छात्रों पर अत्याचार और दुर्व्यवहार देखें उनका विरोध प्रदर्शन करने के कारण कई बार उनको प्रेसीडेंसी कॉलेज से निकाला जा चुका था। आगे की शिक्षा के लिए उनके पिताजी ने उन्हें विदेश भेज दिया उनकी इच्छा थी की उनका पुत्र एक प्रशासनिक अधिकारी बने। सन् 1920 में चौथा स्थान प्राप्त करते हुए वह एक प्रशासनिक अधिकारी बन गए। सन् 1921 तक ब्रिटिश सरकार ने भारत के स्वास्थ्य सेवाओं का इतना बुरा हाल कर दिया था , कि भारत की अधिकांश जनसंख्या प्लेग, कोलरा(हैजा) ,छोटी माता ,मलेरिया आदि जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहा था। उसी दौरान भारत में केवल कोलरा अर्थात् हैजा के कारण लगभग 2 ,50,000 लोगों ने अपनी जान गंवा दी यह सब सुभाषचंद्र बोस देख कर परेशान हो गए उन्होंने अपनी प्रशासनिक अधिकारी के सेवा को त्यागकर भारत को आत्मनिर्भर बनाने का प्रतिज्ञा लिया और उनका मानना था कि भारत के सामाजिक , राजनीतिक भागीदारी के कारण ही सामाजिक आत्मनिर्भरता का उत्थान सुगम हो सकता है। ( https://www.google.nic.in ) इसके

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 2, Issue 5, Non.-Dec. 2022, pp: 395-399 www.ijhssm.org

लिए उन्होंने सन् 1921 के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मैं शामिल हो गए परन्तु गाँधी के अहिंसावादी विचारधारा से सहमत नहीं हुए जिसके परिणामस्वरूप व कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और मई 1939 में कांग्रेस के भीतर ही "फॉरवर्ड ब्लॉक" की स्थापना किया जिसके कारण जनता के साम्राज्यवादी युद्ध से असहयोग करने तथा अँग्रेजी राज्य को खत्म करने के लिए भारतीय साधनों के शोषण के विरोध करते हुए राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह छेड़ दिया जिससे नागपुर अधिवेशन के पश्चात् ही सुभाष चंद्र बोस को जुलाई माह में गिरफ्तार कर लिया गया था। दिसंबर में उनके आमरण अनशन के कारण उन्हें रिहा कर दिया गया उसी समय गाँधीजी ने भी सुभाष चन्द्र बोस के फॉरवर्ड ब्लॉक का आह्वान पर जनता की अनुक्रिया देख अपने विचार में परिवर्तन किया और अक्टूबर 1940 में उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह का नारा बुलंद कर दिया। जनवरी 1941 में सुभाष चन्द्र बोस पुलिस और खुफिया विभाग की बड़ी निगरानी के बावजूद वह कैप्टन मोहन सिंह की सुझाव के अनुरूप अंग्रेजों के खिलाफ़ "आजाद हिंद फौज" के स्थापना हेतु जर्मनी के तानाशाह हिटलर से मिलने चले गए वहाँ हिटलर सुभाष के व्यक्तित्व और विचारधारा से इतने प्रभावित हुए की उन्होंने सुभाष चंद्र बोस को "नेता जी" की उपाधि से सम्मानित कर अंग्रेजों द्वारा जीती भारतीय बंदी सैनिकों को रिहा कर दिया और अपनी सहयोगी मित्र देश जापान के पास सैन्यप्रशिक्षण और कुशल हथियार के लिए भेज दिया था।( https://www.wikipedia.org.in)जापान देश के इस मित्र कार्य के लिए नेताजी सुभाष चंद्र बोस काफी प्रभावित हुए जिससे उन्होंने अंडमान निकोबार द्वीप समूह (शहीद एवं स्वराज पूर्व नाम) उनको पुरस्कार के रूप में भेट कर दिया था। 22 सितंबर 1944 को शहीद दिवस मनाते हुए अपने सैनिकों और भारतीय नागरिक को अभिप्रेरित करने के लिए नारा दिया "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" कहकर संबोधित किया। जापान देश के द्वारा भारतीय सैनिकों को युद्ध कौशल प्रशिक्षण देने के पश्चात् नेता जी ने "दिल्ली चलो" का नारा दिया था।

आत्मनिर्भर भारत के क्षेत्र में सुभाष चंद्र बोस के योगदान में उनकी प्रतिष्ठा को दर्शाने वाली प्रमुख घटनाएँ और उनके महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा किया जा सकता है:-

**भारत की भू-राजनीतिक भागीदारी में सुभाष चंद्र बोस के विचार:-**

भू-राजनीति, राजनीति से संबंधित है और जिस तरह से भूगोल राजनीति या देश के बीच संबंधों को दर्शाता है, अर्थात् राजनीति और भूगोल की अंतर संबंध पर आधारित एक राष्ट्रीय नीति में बदलाव से भारत को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करना ही भू -राजनीतिक भागीदारी कहते हैं। ( Sunday Times,2009 का एक प्रसंग )

जैसे:- प्रथम विश्व युद्ध के बाद के युग की बदलती भू राजनीति ने रूढ़िवादी विचारधारा को बदल दिया जिससे प्रभावित देश आत्मनिर्भर होने की ओर अग्रसर थे और आत्मनिर्भर विचारधारा को जन्म दिया था।

**भारत की आर्थिक स्थिति पर नेता जी की बौद्धिक विचार:-**

नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता के प्रति भावनात्मक झुकाव होने के कारण अपनी बौद्धिक विचारों से "आजाद हिंद फौज" जैसी सैन्य संगठन का गठन किया था। सुभाष का मानना था कि जब तक हम आत्मनिर्भर की विचारधारा के साथ अपने आप को सक्षम बनाने पर केंद्रित नहीं होते तब तक हमें आजादी नहीं मिल सकती है। आजाद हिंद फौज के गठन में कैप्टन मोहन सिंह , रासबिहारी बोस एवं निरंजन सिंह गिल जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई थी। सन् 1943 में टोक्यो रेडियो से यह घोषणा करते हुए नेता जी ने कहा था कि अंग्रेजों से यह आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है , कि वे स्वयं अपना साम्राज्य छोड़ देंगे। अंतः हमें भारत के भीतर व बाहर शेष स्वतंत्रता के लिए स्वयं आत्मनिर्भर बन संघर्ष करना होगा इस बौद्धिक विचारधारा से प्रफुल्लित होकर रासबिहारी बोस ने 4 जुलाई 1943 को 46 वर्षीय सुभाष चन्द्र बोस को आजाद हिंद फौज का नेतृत्व सौंप दिया तभी 5 जुलाई 1943 में सिंगापुर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमांडर के रूप में सेना को संबोधित करते हुए दिल्ली चलो का नारा

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 2, Issue 5, Non.-Dec. 2022, pp: 395-399 www.ijhssm.org

दिया था नेता जी ने ही सवर्प्रथम गाँधीजी को "राष्ट्रपिता" कहकर संबोधित किया था इसके अतिरिक्त भारतीय सैनिकों को ऊर्जावान हेतु कई ब्रिगेड बनाकर उन्हें नाम भी दिया था , जैसे:-महात्मा गाँधी ब्रिगेड, अबुल कलाम ब्रिगेड, जवाहरलाल नेहरू बिग्रेड, रानी लक्ष्मीबाई ब्रिगेड तथा सुभाषचंद्र बोस ब्रिगेड रखा था।
(https://www.aajtak.in/india/news/video/west-bengal-visit-netaji-subhash-chandra-bose )

**समाजसेवी के रूप में अपने चर्चित पुस्तकों के माध्यम से नेता जी के विकासात्मक विचार:-**

नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा लिखित पुस्तकों के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक युगांतरकारी परिवर्तन जैसे संघर्ष को देखा जा सकता है साथ ही नेताजी के जीवन और त्याग को जानने का अवसर प्राप्त होता है जिससे आज के युवा पीढ़ी के लिए उनका विचारधारा एक प्रेरणादायक के रूप में उनको अभिप्रेरित कर सकता है।
(https://www.wikipedia.org.in/सुभाष की चर्चित पुस्तकों के सन्दर्भ )

- **द इंडियन स्ट्रगल**

यह पुस्तक नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा लिखित दो खंडों में विभक्त है, इस पुस्तक के माध्यम से सन् 1920 से लेकर 1942 तक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का अपने बौद्धिक जीवन यात्रा के संघर्ष का इतिहास व्याख्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। ( m.wikipedia )

- **ऐन इंडियन पिलिग्रीम**

नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा यह पुस्तक इंडियन नेशनल कांग्रेस के प्रेसिडेंट नामित होने के बाद अपने यूरोप दौरे के दौरान सन् 1937 उसके अंत में लिखी थी। इस पुस्तक में उन्होंने अपनी जन्म से लेकर प्रशासनिक सेवा से इस्तीफा देने तक अपने बौद्धिक जीवन यात्रा के संघर्ष तथा किस तरह स्वामी विवेकानंद के विचारधारा से प्रभावित होकर एक दार्शनिक आत्मकथा के रूप में लिखा।

- **हिज़ मंजेस्ट्रीज अपोनेंट**

यह पुस्तक मई 2011 मे सुगाता बोस जो एक भारतीय इतिहासकार और राजनीतिज्ञ हैं, के द्वारा लिखित नेताजी सुभाष चंद्र बोस के साथ -साथ स्वतंत्रता क्रांतिकारियों के संघर्ष एवं उनके विचारों को आकार प्रदान करते हुए एक तथ्यपूर्ण आत्मकथा लिखी।

- **द एसेंशियल राइटिंग्स ऑफ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस**

यह पुस्तक सिसिर के0 बोस और सुगाता बोस द्वारा लिखित सुभाष चन्द्र बोस के राजनीतिक , आर्थिक और सामाजिक विषयों पर लिखें गए प्रलेखों, लेखों को संजोयन का काम किया है।

- **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस: फियड ईवेन इन कैप्टिविटी**

यह पुस्तक 10 फरवरी 2018 को प्रकाशित शांतनु बनर्जी द्वारा लिखित द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् नेता जी के जीवन में आए परिवर्तन तथा अपने संपूर्ण जीवनकाल में 11 बार अंग्रेजों की कैद से भाग निकलने की संघर्ष को बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। ( https://www.Bloomsbury.com/ netaji Subhash Chandra Bose: feared even in captivity )

- **बोस एन इंडियन समुराई**

जी0डी0 बख्शी द्वारा लिखित यह पुस्तक द्वितीय विश्व युद्ध में नेताजी की "आजाद हिंद फौज" यानी "इंडियन नेशनल आर्मी" की भूमिका पर विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन पर आधारित उनकी बौद्धिक यात्रा को संदर्भित करते हुए यह विभिन्न चर्चित पुस्तक नेता जी के भारतीय स्वतंत्रता के प्रति उनकी भावनात्मक झुकाव को प्रदर्शित करते हुए आत्मनिर्भर विचारधारा को अपनाने पर केंद्रित है।(https://www.wikipedia.org.in/netaji Subhash Chandra Bose)

**आधुनिक भारत का सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक ढांचा विकसित करने में सुभाष चंद्र बोस की महत्वपूर्ण भूमिका:-**

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 2, Issue 5, Non.-Dec. 2022, pp: 395-399 www.ijhssm.org

भारतीय उपनिवेशों में जहाँ आजादी की मांग ज़ोर पकड़ती जा रही थी वहीं ब्रिटिश सरकार के सामने अपनी कुछ आंतरिक गंभीर चुनौतियों जन्म ले रही थी। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भारत सहित पूरे विश्व में भीषण मंदी का अनुभव कर रहा था। औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार के समक्ष स्थानीय समस्याओं के मूल्य में कुछ वैश्विक मंदी जैसी आर्थिक संकट था जिससे भारतीय मूल के सैनिकों का बहिष्कार कर बेरोजगार करके निष्कासित किया जा रहा था जिसके कारण अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ़ विद्रोह और बढ़ जाने से उनकी चुनौतियां और बढ़ गई थी यही कारण था की सुभाष चन्द्र बोस ने आधुनिक भारत का सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक विचारधारा को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी उनका मानना था कि अगर हमें आजादी चाहिए तो हमें स्वतः आत्मनिर्भर एवं सक्षम बनना होगा।(https://www.google.nic.in/ www.civilseries.india.com) नेता जी के इस विचारधारा के कारण उनकी लोकप्रियता गाँधी से भी ज्यादा होने लगी थी अर्थात् सुभाष के विचारधारा को सभी भारतीयों द्वारा अपनाए जाने लगे जिसके परिणामस्वरूप गाँधी जी से राष्ट्रपति पद हेतु अपने उम्मीदवार सीता रामायण को सुभाष के विरुद्ध खड़ा कर दिया परन्तु चुनाव का परिणाम गाँधी के विरुद्ध आया जो इस प्रकार है:-

| उम्मीदवार का नाम | वोट |
|---|---|
| 1. सीता रमैया | 1375 |
| 2. सुभाष चंद्र बोस | 1580 |

इस परिणाम से यह पता चलता है , कि सुभाष अपने विराट व्यक्तित्व के कारण प्रख्यात उग्र क्रांतिवादी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के रूप में उभरे जिससे भारतीय संविधान में निहित अधिकारों तथा मौलिक हक की रक्षा कर आधुनिक भारत का सामाजिक ढांचा विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसका उदाहरण एक प्रसंग के रूप में दिया गया है:-

किलमेंट एटली(Clement Attlee) जो 1945 से 1949 तक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे, अपने एक साक्षात्कार में कहा था , कि हम भारत छोड़ने पर केवल सुभाष चन्द्र बोस (गरम दल) के प्रभाव इसके कारण मजबूत थे गाँधी विचारधारा (नरम दल) का प्रभाव तो नगण्य था नेता जी के अनेक कारणों को स्पष्ट किया था जिसमें से एक तत्कालीन वायसरॉय लॉर्ड वेवेल द्वारा अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर आजाद हिंद फौज के गिरफ्तार प्रमुख सैनिकों को मृत्युदंड की सजा माफ़ कर दिया गया था। ( https://www.wikipedia.org.in )

**नेताजी सुभाष चंद्र बोस के कल्याण वादी विचार वर्तमान में भी प्रासंगिक:-**

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के कल्याणवादी विचारधारा आज के समय के लिए भी उपयुक्त है , वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था की सभी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं जैसे - असमानता, बेरोजगारी ,महिलाओं काशोषण ,पिछड़ापन आदि से सम्बन्धित गम्भीर विचारधारा को देखा जा सकता है, उनके इसी कल्याणवादी विचारधारा को सम्मानित करने एवं उसे वर्तमान में भी प्रासंगिक बनाने हेतु भारतीय सरकार द्वारा 'आजाद हिंद सरकार' के 75वीं वर्षगांठ पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने वर्ष 2018 में पहली बार लाल किला पर तिरंगा फहराया साथ ही 23 जनवरी को नेता जी की 125 वीं जयंती पर हर वर्ष "पराक्रम दिवस" के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। ( https://google.nic.in/ netaji Subhash Chandra Bose)

**निष्कर्ष(Conclusion):-** नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय अर्थव्यवस्था के वस्तुनिष्ठ विचारधारा को अपनाते हुए न्याय संगत अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना चाहते थे ताकि हर भारतीय की विचारधारा को एक कर व्यक्तिगत व्यक्तित्व निर्माण से आत्मनिर्भर बनाने का काम किया जा सके। सुभाष चंद्र बोस का योगदान किसी भी स्वतंत्रता सेनानी के सामाजिक स्तर से कहीं ज्यादा था क्योंकि भारतीय समाज के विचारधारा में अमूलचूल परिवर्तन कर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने आत्मनिर्भर भारतीय समाज के संदर्भ में व्यवहारिक योगदान किया था जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था के उद्देश्यों को वास्तविक अर्थ

में साकार किया इनका यह अविस्मरणीय योगदान समाज और देश के प्रति असीम संवेदना और गहन वैचारिक का परिणाम है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि सामाजिक एवं राजनैतिक भागीदारी के बिना सामाजिक आत्मनिर्भरता का उत्थान संभव नहीं है , आज के समय भारत में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, लैंगिक असमानता आदि जैसी कई सामाजिक आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है हमें अपने भीतर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के विचार की भावनाओं को खोजने की और उस पर अनुसरण करने की आवश्यकता है , ताकि हम इन सभी चुनौतियों से खुद को बाहर निकाल आत्मनिर्भर बन सकें।

**संदर्भ ग्रंथ सूची(Reference):-**


- https://www.google.nic.in/:28August.2022
- बोस, सुभाष चंद्र (1997)। बोस, सुगाता; बोस, सिसिर के.(संपा.)नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आवश्यक लेखन। दिल्ली:ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ,ISBN-9780195648546.
- "His Majesty's Opponent, By Sugata Bose".The Independent. 22 July 2011. Retrieved 28 March 2019.
- "Bose,Sugata–"His Majesty's Opponent: Subhas Chandra Bose and India's Struggle against Empire".Projects.iq.harvard.edu. Retrieved 28March 2019.
- "Review:His Majesty's Opponent".Hindustan Times. 6August 2011. Retrieved 28 March 2019.
- Dr.Shashi Bala (MGKVP) "अर्थशास्त्र के क्षेत्र में डा0 अंबेडकर की वैज्ञानिक दृष्टि-भारतीय अर्थव्यवस्था के विशेष सन्दर्भ में" आर्यवर्त शोध विकास पत्रिका, vol.14, issue 22,PP-82-85.
- https://www.wikipedia.org.in/:8September,2022.
- https://www.jagran.com/:23January2022.
- https://www.aajtak.in/india/news/video/west-bengal-visit-netaji-subhash-chandra-bose.
- सुभाष चन्द्र बोस निबंध".मूल से 23 सितंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 जनवरी 2014श्रीकृष्ण सरला(1999)।